International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

देवी अहिल्याबाई होलकर और सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में उनका योगदान

शोधार्थी - यशवंत कुमार बंसल

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र)

शोध सारांश-

देवी अहिल्याबाई होलकर भारतीय इतिहास में एक महान महिला शासक के रूप में जानी जाती हैं, जिन्होंने 18वीं सदी के मध्य में इंदौर और आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया। उनका शासन न्याय, सामाजिक सुधार, धार्मिक सहिष्णुता, और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के लिए प्रसिद्ध था। वे न केवल एक सक्षम शासक थीं, बल्कि महिलाओं के अधिकारों और धार्मिक स्थलों के संरक्षण के लिए भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किए। प्रस्तुत शोध पत्र उनके महत्पूर्ण सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में किये कार्यों की विवेचना करता है।

मूल शब्द:- सामाजिक, धार्मिक, महेश्वर, मंदिर, देवी आदि

- **प्रारंभिक जीवन:**

देवी अहिल्या बाई का जन्म महाराष्ट्र प्रदेश के औरंगाबाद शहर के समीप बीड़ तहसील के अंतर्गत चौंड़ी नाम का एक छोटे से गाँव में भारतीय कालगणना के अनुसार विक्रम संवत 1732 वैशाख मास की कृष्ण पक्ष सप्तमी तिथि 31 मई 1725 को हुआ था उनके पिता का नाम माणकोजी शिंदे और माता का नाम सुशीलाबाई था.

अहिल्याबाई की पारिवारिक पृष्ठभूमि एक सामान्य परिवार से आती थीं। उनके पिता माणकोजी शिंदे एक साधारण गृहस्थ और ग्राम के पाटिल थे। पाटिल, जिसका अर्थ होता है- 'गाँव का मुखिया', जो एक देशमुख के अधीन रहकर काम करता था। दक्कन सल्तनत और मराठा साम्राज्य में पाटिल गाँव का सबसे महत्त्वपूर्ण वतनदार होता था। उनका मुख्य कार्य राजस्व का संग्रह करना था।

माणकोजी शिंदे की पत्नी का नाम सुशीलाबाई था। वे एक सामान्य गृहिणी थीं। पूजा-पाठ, कथा-भागवत सुनना उनकी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा था। वे विदुषी, धर्मात्मा व कर्तव्यपरायण महिला थीं। भारतीय नारी के सभी सद्गुण उनमें स्वभाविक थे। जिसका प्रभाव सीधा देवी अहिल्या बाई पर पड़ा था।

अहिल्या के जन्म के पश्चात् एक ज्योतिष ने मणकोजी शिंदे के कहने पर अहिल्या की जन्म कुंडली देखकर कहा था- "यह कन्या बहुत यशस्वी होगी, संपन्न घराने की रानी बनेगी। इसकी यशगाथा संपूर्ण भारत में सदियों तक याद की

जाएगी।" यह सुनकर माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए, परंतु उनकी जिज्ञासा और बढ़ गई थी, एक सामान्य किसान की बेटी रानी कैसे बन सकती है ? लेकिन पंडितजी ने कहा, "कुछ बातें भविष्य पर छोड़ देनी चाहिए, शिव सबका भला करेंगे।"

अहिल्या ने अपने कार्यों से उस गाँव और अपने माता-पिता के नाम को प्रसिद्धि दिलाई। वही 'अहिल्या', जो बाद में भारतीय इतिहास में लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर के रूप में संपूर्ण भारत और दुनिया में विख्यात हुई।

- **वैवाहिक जीवन:**

होल्करों का मुख्य गाँव होल था, जो वर्तमान में महाराष्ट्र के सतारा जिले में आता है। मल्हारराव होल्कर का जन्म 16 मार्च1693 को इसी होल गाँव में एक अत्यंत साधारण महाराष्ट्रियन धनगर परिवार में हुआ था। होल गाँव के निवासी होने के कारण ये होल्कर कहलाए। सन् 1724 में पेशवा सरकार ने मल्हार राव को खिलहत देकर सम्मानित किया, फिर फौज का सूबेदार बनाकर मालवा तथा खानदेश का अधिकारी नियुक्त किया था। वे मालवा में मराठा साम्राज्य के संस्थापक थे। उन्होंने अपनी राजधानी इंदौर में बनाकर सन् 1741 में खान नदी के किनारे अपना एक विशाल राजवाड़ा बनवाया था। उन्होंने अनेक व्यापारियों को इंदौर लाकर बसाया था। इंदौर जैसे एक छोटे से गाँव को अपनी राजधानी बनाकर उसे वैभव संपन्न बनाया। इन्ही मल्हारराव होल्कर के एकमात्र पुत्र खंडेराव होल्कर के साथ देवी अहिल्याबाई का विवाह 1733 में हुआ था. विवाह के समय युवराज खंडेराव होल्कर की आयु 13 वर्ष और अहिल्या की आयु आठ वर्ष थी।

विवाह के पश्चात् अहिल्या अपने ससुराल इंदौर आ गई थी। ससुराल में मल्हारराव की तीन पत्नियाँ गौतमाबाई, द्वारकाबाई और बनाबाई थीं। अहिल्या को अपनी तीनों सासों का बड़ा स्नेह और प्रेम मिला, वह शीघ्र ही सबकी चहेती बन गई। अपने सद्गुणों व अच्छे व्यवहार के कारण वह सबके नजदीक आ गई। बड़े-छोटे सबके साथ उसका अनुकूल व्यवहार सबको भा जाता था। यह उसके संस्कार ही थे, जिसके कारण वह अपने सास-ससुर को माता-पिता के समान ही मानकर उनकी सेवा करती थी। अहिल्या अपने परिवार से जो संस्कार लेकर आई थी, उसको वह अपने आचरण में नित्य प्रयोग करती थी। उनकी दिनचर्या में प्रातः सुबह जल्दी उठना, स्नान कर पूजा-पाठ करना था। अपने धार्मिक अनुष्ठान करने के पश्चात् वह घर के कार्यों में लग जाती थी। आलस्य उसके स्वभाव में नहीं था। वो भगवान शिव की परम भक्त थी।

अहिल्या के धार्मिक कार्यों पर अपने माता-पिता के पश्चात् सबसे अधिक प्रभाव किसी का रहा तो वह गौतमाबाई का था। गौतमाबाई बड़ी ही धर्मपरायण, निडर, साहसी एवं स्पष्टवादी महिला थीं। साथ ही प्रशासन प्रबंधन, वित्त प्रबंधन, राजनीतिक कौशल उन्हें गौतमाबाई ने ही सिखाए थे। अहिल्या ने अपने ससुर मल्हारराव के संरक्षण में हाथी की सवारी, घोड़े की सवारी, शस्त्रों का संचालन, सेना संचालन एवं युद्ध कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अहिल्या की बुद्धि कुशलता

को देखकर मल्हारारावजी राजमहल व प्रशासनिक कार्यों में उनसे परामर्श लेने लगे थे। एक तरह से देखें तो मल्हारराव अहिल्या के राजनीतिक गुरु थे।

खंडेराव, जिनसे अहिल्या का विवाह हुआ था, वे अक्खड़ और क्रोधी प्रवृत्ति के थे, लेकिन विवाह के पश्चात् खंडेराव के जीवन में भी काफी परिवर्तन आ गया था। वे भी अहिल्या से संतुष्ट रहते थे। इसलिए उसने हमेशा अहिल्या से अच्छा व्यवहार किया था। खंडेराव जब कभी अशांत या दुविधा में होते थे तब अहिल्या ने जो धार्मिक कथाएँ सुनी और पढ़ी थीं, वह खंडेराव को समयानुसार सुनाती थीं। इस तरह अपनी विनयशीलता, सेवा भावना, शांत स्वभाव से पति खंडेराव का मन उन्होंने जीत लिया था।

सन् 1745 में देपालपुर में उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया, बालक का नाम मालेराव रखा गया। आगे चलकर तीन वर्ष पश्चात् फिर से अहिल्या और खंडेराव के यहाँ खुशियों का अवसर आया और उनके यहाँ कन्या का जन्म हुआ। उसका नाम मुक्ताबाई रखा गया। इस प्रकार पुत्र मालेराव, पुत्री मुक्ताबाई के कारण अहिल्या के जीवन में आनंद छा गया था। इस प्रकार अहिल्या का जीवन सुखपूर्वक बीत रहा था। सन् 1754 तक अहिल्या का पारिवारिक जीवन बहुत ही सामान्य रहा था, लेकिन इसके पश्चात् उनका जीवन काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा। विवाह के बाद खंडेराव में आए परिवर्तन से मल्हारराव अत्यधिक प्रसन्न थे। अपने उत्तराधिकारी के तौर पर खंडेराव को धीरे-धीरे राज्य के सभी कार्य सौंप देना चाहते थे। खंडेराव एक वीर, साहसी, स्वाभिमानी और महत्त्वाकांक्षी योद्धा थे। वे अच्छे घुड़सवार और तलवार चलाने में माहिर थे। कई अवसरों पर मल्हारारावजी के साथ युद्ध मैदान में अपने शौर्य का प्रदर्शन कर चुके थे।

मल्हारारावजी ने एक युद्ध में सूरजमल जाट को जनवरी 1754 में कुम्हेर के किले में घेर लिया था। कई दिनों तक युद्ध चला, जिसमें अहिल्याबाई और खंडेराव भी युद्ध मैदान में थे। लेकिन मल्हारराव होल्कर और सूरजमल जाट दोनों युद्ध मैदान से पीछे हटने को तैयार नहीं थे। 24 मार्च, 1754 को खंडेरावजी अपनी सेना का संचालन करते हुए युद्ध मैदान का निरीक्षण कर रहे थे तभी किले से एक गोली आई और खंडेरावजी को लगी। इस तरह कुम्हेर में जाटों के विरुद्ध लड़ाई करते हुए खंडेराव वीरगति को प्राप्त हो गए। खंडेराव की मृत्यु के साथ ही जाटों ने किले से गोले दागना बंद कर दिया। सेना में हाहाकार मच गया और मल्हारारावजी दौड़े-दौड़े अपने पुत्र के शव के पास आए। अपने बेटे के शव को गले लगाकर बिलख-बिलखकर रोने लगे। उनकी इस प्रकार की दशा देख सभी में निराशा छा गई। पतिवियोग में अहिल्याबाई भी मानसिक रूप से परेशान हो गयी और अपने पति के शव को देखकर उन्होंने भी उन्ही की चिता पर सती होने का निर्णय ले लिया इससे व्याकुल होकर मल्हारराव होल्कर ने अहिल्या से कहा –‘ बेटी, यह क्या बचपना है। मुझ बूढ़े अभागे पिता को छोड़कर चली जाना चाहती है। बेटी, मैं बिलकुल अकेला पड़ गया हूं। मेरा एकमात्र सहारा छीन गया है। खंडोजी तो इस वृद्ध पिता को धोखा देकर चला गया, अब क्या तू भी धोखा देकर चली जाना चाहती है? बेटी, तू प्राण त्याग देगी तो इस साम्राज्य का क्या होगा? इस वृद्ध का क्या होगा? तू अपनी बात पर अडिग रहेगी तो

तुझसे में बंदर पहले मैं अपना प्राण अवश्य ही त्याग दूंगा। बेटी, यह साम्राज्य, धन, संपदा अब तेरे ही तो हैं। तू अपने कर्तव्य और जिम्मेदारी से न भाग। परिवार और राष्ट्र के लिए तुझे जीना पड़ेगा' यह शब्द सुनकर अहिल्या बाई ने सती होने का निर्णय त्यागकर एक निर्भिग महिला के रूप में स्वयं को संभाला.

- **मल्हारराव की मृत्यु और शासिका के रूप में उदय**

एक लंबा जीवन और कई उतार-चढ़ाव देखने के पश्चात् अब मल्हारराव विश्राम चाहते थे, परंतु एक कर्मयोगी और सैनिक के जीवन में विश्राम कहाँ होता है। मालवा के विरोध को शांत करने के पश्चात् राघोबा पेशवा, महादजी सिंधिया, तुकोजीराव वयोवृद्ध हो चुके मल्हारराव होल्कर और उनके पौत्र मालेराव उत्तर भारत की मुहिम पर निकले थे। मांगरोल के युद्ध में मल्हारराव होल्कर को लगे घाव के कारण उन्हें अत्यंत पीड़ा हो रही थी। इसी पीड़ा के कारण उनका स्वास्थ्य भी खराब हो गया था। खराब स्वास्थ्य के चलते उन्हें आलमपुर (भिंड) रुकना पड़ा। बहुत इलाज किया, परंतु उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार न हो सका। 20 मई 1766 को अपने पौत्र का हाथ महादजी और तुकोजीराव के हाथ में सौंपकर इस संसार से सदा-सदा के लिए विदा हो गए। जाते-जाते मालेराव को कह गए- "मेरे बाद पेशवा की चाकरी तुम करना।"

मालेराव आठ वर्ष की आयु से ही पिता खंडेराव होल्कर और दादा मल्हारराव होल्कर के साथ विभिन्न युद्ध अभियानों में रहे थे। मालेराव स्वयं एक महान् योद्धा थे। 1761-62 में मल्हारराव ने मालेराव की तलवारबाजी से प्रभावित होकर उसे सुल्तानपुर की जागीर पुरस्कार के रूप में दी थी। मल्हारराव होल्कर के स्वर्गवास के पश्चात् अब होल्कर राजसिंहासन पर विराजमान होकर मालेराव मालवा का राजा बन गया था और अहिल्याबाई उसकी संरक्षक बन गई थी। मालेराव को शासन की बागडोर सँभाले हुए अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ था। उनका पुत्र मालेराव भी नौ-दस मास में ही मानसिक अस्वस्थता और बीमारी के कारण 1767 में चल बसा। अहिल्याबाई पूर्ववत् राजकार्य सँभालती रहीं और एक विश्वस्त तुकोजीराव होल्कर को उसने सेनापति बना दिया। अपने दुःख, कष्ट को जनता के सामने नगण्य मानकर पुनः अपने धर्मपरायण, लोकसेवा और प्रशासनिक कार्यों को अपने जीवन कार्य समझकर करने लगी थीं। पुत्र की मृत्यु के पश्चात देवी अहिल्या बाई ने शासन की जिम्मेदारी अब पूर्ण रूप से स्वयं अपने हाथों में ली और 11 दिसम्बर 1767 को उनका राज्यभिषेक हुआ.

अपने पुत्र मालेराव के निधन के बाद देवी अहिल्या का मन सांसारिक मोहजाल से पूर्णतया विरक्त हो गया था। मगर अपने श्वसुर स्व. मल्हारराव को दिया हुआ उनका वचन तथा अपने राज्य की प्रजा की चिंता उन्हें ऐसा करने से रोक रही थी। इसलिए उन्होंने नई राजधानी बनाने का निणर्य लिया और इसके लिए ज्योतिषों से विचार विमर्ष किया गया. पवित्र नर्मदा नदी पर उनकी बड़ी श्रद्धा थी। नर्मदा नदी इंदौर से बहुत दूर नहीं थी। नर्मदा नदी पर कई तीर्थस्थल थे। देवी अहिल्या ने अपनी राजधानी को नर्मदा के किनारे किसी तीर्थस्थल पर ले जाने का निश्चय किया, जहाँ से वे राज्य

संचालन तथा स्वयं की मोक्ष-साधना, दोनों ही कर सकें। उन्होंने नर्मदा किनारे के गाँवों का इस दृष्टि से निरीक्षण किया। निमाड़ जिले में मरदाना नामक एक प्राचीन गाँव उन्हें राजधानी बनाने योग्य प्रतीत हुआ।

मगर ज्योतिषियों द्वारा उसे राजधानी बनाए जाने के लिए उचित न बताए जाने से मरदाना को राजधानी बनाने का विचार त्याग दिया। तभी उनका ध्यान महेश्वर की ओर गया। उन्हें वह स्थान राजधानी तथा परमार्थ साधना- दोनों ही दृष्टियों से उचित प्रतीत हुआ, इसलिए उसे ही सब दृष्टि से श्रेष्ठ मानकर राजधानी बनाने का निश्चय किया गया। देवी ने अपने शेष जीवन के लगभग अट्ठाईस वर्ष महेश्वर में बिताए। इस काल में महेश्वर देश के नक्शे पर एक महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा। देश भर के प्रमुख राज्यों के दूतों और राजनेताओं, विद्वानों तथा संत-महात्माओं का निरंतर महेश्वर आना-जाना होता रहा। इससे महेश्वर की खूब प्रगति और विकास हुआ तथा यह प्राचीन तीर्थ नगरी पुनः भारतवर्ष के प्रमुख नगरों में गिनी जाने लगी।

- **देवी अहिल्याबाई होलकर के सामाजिक कार्य**

देवी अहिल्याबाई होलकर का शासन केवल प्रशासनिक दृष्टिकोण से ही सफल नहीं था, बल्कि उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं में सुधार के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके सामाजिक कार्यों ने भारतीय समाज में एक नई दिशा दी, खासकर महिलाओं, गरीबों और धार्मिक सहिष्णुता के क्षेत्र में।

1. महिलाओं के अधिकार और सशक्तिकरण

देवी अहिल्याबाई होलकर ने महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनके शासन में महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति का अधिकार, और सामाजिक सुरक्षा मिली। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि महिलाएं समाज में अपनी पहचान और सम्मान के साथ जी सकें। उनके शासनकाल में महिलाओं को विधवा होने पर भी सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार मिला।

2. गरीबों और कमजोर वर्गों के लिए कार्य

देवी अहिल्याबाई होलकर का शासन गरीबों और जरूरतमंदों के लिए भी समर्पित था। उन्होंने समाज के सबसे निचले वर्ग के लोगों के लिए कई कल्याणकारी योजनाओं की शुरुआत की। उन्होंने भिक्षाटन और समाजसेवा को बढ़ावा दिया, जिससे समाज के गरीब और जरूरतमंद लोग भी मदद पा सकें। उन्होंने सड़क निर्माण, जल आपूर्ति, और सामाजिक कल्याणकारी योजनाओं को प्राथमिकता दी।

3. शिक्षा के क्षेत्र में सुधार

देवी अहिल्याबाई ने समाज में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए। उन्होंने बच्चों और महिलाओं के लिए शिक्षा को एक अनिवार्य आवश्यकता मानते हुए कई विद्यालयों और संस्थाओं की स्थापना की। उनका उद्देश्य यह था कि शिक्षा का प्रचार समाज में समृद्धि और समानता लाए। इसीलिए उन्हें नारी शिक्षा का अग्रदूत भी कहा जाता है।

4. धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक समरसता

देवी अहिल्याबाई का शासन धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक था। उन्होंने समाज के विभिन्न धर्मों और समुदायों को समान सम्मान दिया। उनके शासन में किसी भी धर्म के अनुयायियों के बीच भेदभाव नहीं था। उनका उद्देश्य समाज में धार्मिक सद्भावना और समाज में एकता को बढ़ावा देना था।

5. सांस्कृतिक और कला संरक्षण

देवी अहिल्याबाई ने समाज में संस्कृति और कला को बढ़ावा दिया। उनके शासन में स्थापत्य कला, मूर्तिकला, और हस्तशिल्प को बढ़ावा दिया गया। उन्होंने महेश्वर किला और महेश्वरी साड़ी जैसे सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित किया, जो आज भी उनके शासनकाल की महानता को दर्शाते हैं। महेश्वर में स्थित साड़ी उद्योग को उनके शासन में बढ़ावा मिला, जिससे महिलाओं को रोजगार मिला और इस पारंपरिक उद्योग को एक नई पहचान मिली।

6. संस्कृतिक धरोहर और धार्मिक स्थल निर्माण

देवी अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में धार्मिक स्थलों का संरक्षण और निर्माण किया, जिससे समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण हुआ। उनके द्वारा किए गए प्रमुख कार्यों में काशी विश्वनाथ मंदिर, रामेश्वर मंदिर, और अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण शामिल है।

- **देवी अहिल्याबाई होलकर का धार्मिक क्षेत्र में योगदान**

देवी अहिल्याबाई होलकर का धार्मिक योगदान भारतीय समाज और संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनका शासन धार्मिक सहिष्णुता, मंदिरों के पुनर्निर्माण, और धार्मिक स्थलों के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध था।

बचपन से ही वे परम शिवभक्त थीं। मल्हारराव होलकर से उनकी पहली भेंट भी चौंड़ी के शिव मंदिर में ही हुई थी। विवाह के पश्चात् राजघराने में बहू बनकर आने के बाद भी उनमें बसे धर्म-परायणता के संस्कार वैसे ही बने रहे। पति के निधन के बाद प्रचलित परंपरानुसार पति के साथ सहगमन कर सती होने की इच्छा को उन्हें श्वसुर के आग्रह के कारण और प्रजा के हित में छोड़ना पड़ा था। मगर उसके बाद उनके जीवन का उद्देश्य केवल ईश्वर की आराधना तथा नर-

नारायण रूपी प्रजा की सेवा ही बन गया था। उन्होंने न केवल अपनी प्रजा के कल्याण के लिए काम किया, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के लिए भी कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनके धार्मिक कार्यों का प्रभाव आज भी महसूस किया जाता है। उनके द्वारा किये गये प्रमुख धार्मिक का वर्णन निम्नानुसार है:-

1. धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देना

देवी अहिल्याबाई होलकर का दृष्टिकोण था कि समाज में सभी धर्मों को समान सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने अपने शासनकाल में धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। उनका मानना था कि धर्म और आस्था का सम्मान किया जाना चाहिए, चाहे वह किसी भी धर्म का हो।

2. मंदिरों का पुनर्निर्माण और संरक्षण

यह देवी अहिल्याबाई का धार्मिक क्षेत्र में किया गया महत्पूर्ण योगदान था जिसमे उन्होंने कई प्रमुख धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण और सुधार कराया। उनके शासनकाल में कई मंदिरों को नवजीवन मिला, जिससे धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण हुआ। 28 बरस के अपने शासनकाल में उन्होंने देशभर में 65 मंदिर, धर्मशालाएं, सड़कें, तालाब और नदियों के भव्य घाट बनवाए। बताते हैं कि वे शिव की इतनी अनन्य भक्त थीं कि रियासत के हर ऑर्डर पर हुजूर शंकर लिखा जाता था। उन्हें मिली सोलह करोड़ रुपए की खासगी की संपत्ति पर भी तुलसी-पत्र रखकर उन्होंने उसे ईश्वर को अर्पण कर दिया था। इसी धनराशि से उन्होंने देश भर के मंदिरों और तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार करवाए।

महेश्वर में रहते हुए देश के दूरस्थ स्थलों जैसे अमरकंटक, बद्रीनाथ, केदारनाथ, अयोध्या, गंगोत्री, पुष्कर, मथुरा, रामेश्वर तथा हरिद्वार में धर्मशालाएं बनवाईं। उज्जैन में 9 मंदिर और 13 घाटों का निर्माण उनके नाम है। उनके द्वारा कराए प्रमुख निर्माण:-

काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी - भगवान शिव का यह प्राचीनतम मंदिर गंगा नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। कहा जाता है कि यह मंदिर भगवान शिव और माता पार्वती का आदि स्थान है। मंदिर के वर्तमान स्वरूप का निर्माण 1780 में देवी अहिल्या देवी ने करवाया था। मणिकर्णिका घाट का भी निर्माण वाराणसी में इन्ही के द्वारा किया गया था.

सोमनाथ मंदिर, वेरावल, गुजरात - कहा जाता है कि सोमनाथ का मंदिर ईसा के पूर्व भी था। मंदिर पर बार-बार आक्रमण हुए। 1783 में अहिल्या देवी ने पुणे के पेशवा के साथ मिलकर ध्वस्त मंदिर के पास अलग मंदिर का निर्माण कराया। मंदिर के गर्भगृह को जमीन में बनाया गया।

विष्णुपद मंदिर, गया, बिहार - माना जाता है विश्व में यही एक ऐसा मंदिर है जहां भगवान विष्णु के चरण चिन्ह की पूजा होती है। इसे धर्मशिला के नाम से भी जाना जाता है। फालगु नदी के तट पर बने इस मंदिर का पुनर्निर्माण 1787 में

अहिल्या देवी ने कराया था। बैजनाथ मंदिर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश - यह नागर शैली में बना हिंदू मंदिर है। इसे 1204 ईस्वी में अहुका और मन्युका नामक दो स्थानीय व्यापारियों ने बनवाया था। यह वैद्यनाथ (चिकित्सकों के प्रभु) के रूप में भगवान शिव को समर्पित है। एलोरा के गणेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार अहिल्या देवी होलकर द्वारा कराया गया।

3. धार्मिक और सामाजिक कार्यों के लिए धन की व्यवस्था

देवी अहिल्याबाई होलकर ने धार्मिक स्थलों के निर्माण और संरक्षण के लिए अपने राज्य की संपत्ति का उपयोग किया। उन्होंने न केवल मंदिरों के पुनर्निर्माण के लिए धन दिया, बल्कि साधुओं, संतों और धार्मिक प्रतिष्ठानों की मदद भी की।

अंतिम समय और मृत्यु

अहिल्याबाई का जीवन एक आदर्श राज्य शासक का जीवन रहा है। उन्होंने शक्ति के बल पर नहीं, बल्कि प्रेम और भक्ति के बल पर प्रजा के दिलों में अपना स्थान बनाया था। उनके लोक कल्याण के कार्य आज भी लोगों के लिए प्रेरणा का कार्य करते हैं। उनके धार्मिक कार्य लोगों के नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को ऊपर उठाने की एक दिशा हैं। वे सभी धर्म, मत, पंथ को समान दृष्टि से देखती थीं। उनका अपनी प्रजा के प्रति आत्मिक प्रेम अपनी संतान के समान था। उनकी न्याय व्यवस्था उच्च कोटि की थी, उनकी प्रतिमा लोगों के दिलों में हाथ में शिव प्रतिमा लिये अंकित है। इसका मतलब उनका न्याय ईश्वर का न्याय था, ऐसा आज भी लोक कथाओं में चर्चित है। उनका प्रशासन का आधार सुशासन था। उनकी युद्ध नीति कठोर, सामंजस्य और सौहार्दपूर्ण थी। उन्होंने मनुष्य जीवन के आदर्श स्थापित किए, जो युगों-युगों तक समाज को प्रेरणा देते रहेंगे।

भारत राष्ट्र की राष्ट्र नायिका, राष्ट्रसेविका, पुण्यश्लोका, लोकमाता और देवी ने 70 वर्ष की आयु में भाद्रपद कृष्ण पक्ष चतुर्दशी शके 1717 तद्नुसार 13 अगस्त, 1795 को अपने जीवन को पूर्ण किया। अहिल्याबाई 28 वर्ष 5 माह 17 दिन शासन कर विश्व भर के सामने अपने आचरण से एक आदर्श शासक का उदाहरण प्रस्तुत कर गईं। महेश्वर में नर्मदा के किनारे जिस स्थान पर उनकी अंत्येष्टि की गई, बाद में वहाँ उनकी छत्री बना दी गई।

➢ निष्कर्ष

देवी अहिल्याबाई होलकर का शासनकाल भारतीय समाज और संस्कृति के लिए एक सुनहरा अध्याय था। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने, धार्मिक स्थलों का संरक्षण, और सामाजिक न्याय के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उनकी सशक्त नेतृत्व क्षमता, धार्मिक सहिष्णुता, और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण ने उन्हें भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय स्थान दिलाया। उनका योगदान आज भी समाज और शासकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। एक शासिका के रूप में भी उनका योगदान महत्पूर्ण रहा था.

अहिल्याबाई ने शासन कैसे चलाया होगा यह महेश्वर के किले में लिखे उनके इन शब्दों से प्रकट होता है- "ईश्वर ने मुझ पर जो उत्तरदायित्व रखा है, उसे मुझे निभाना है। मेरा काम प्रजा को सुखी रखना है। मैं अपने प्रत्येक काम के लिए जिम्मेदार हूँ। सामर्थ्य व सत्ता के बल पर मैं यहाँ जो कुछ भी कर रही हूँ, उसका ईश्वर के यहाँ मुझे जवाब देना होगा। मेरा यहाँ कुछ भी नहीं है, जिसका है, उसी के पास भेजती हूँ, जो कुछ लेती हूँ, वह मेरे ऊपर ऋण (कर्जा) है, न जाने कैसे चुका पाऊँगी।" देवी इन्हीं भावों को लेकर सदा कार्य करती रही थीं।

देवी अहिल्याबाई होलकर का धार्मिक योगदान उनके शासनकाल की महानता को और भी प्रमुख बनाता है। उनके धार्मिक कार्यों ने भारतीय समाज को न केवल सांस्कृतिक रूप से समृद्ध किया, बल्कि समाज में धार्मिक सहिष्णुता और एकता को भी बढ़ावा दिया। उनका उद्देश्य केवल धार्मिक स्थलों का निर्माण नहीं था, बल्कि समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करना था। उनके कार्य आज भी भारतीय धर्म, संस्कृति, और समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

➢ सन्दर्भ सूची

1. लोकमाता अहिल्याबाई – अरविन्द जावलेकर
2. वीरांगना अहिल्याबाई होल्कर – राजेंद्र पांडेय
3. राष्ट्र सेविका माँ अहिल्याबाई होल्कर – निखिलेश महेश्वरी
4. ज्ञात अज्ञात देवी अहिल्या बाई होलकर (हिंदी संस्करण) – विनया खडपेकर
5. लोकमाता अहिल्या-ले. श्री उदयभानू शर्मा
6. अहिल्याबाई-ले. श्री हीरालाल शर्मा
7. देवी अहिल्याबाई होलकर विशेषांक- संपादक- श्री अवधूत शास्त्री
8. अहिल्या स्मारिका- प्रकाशक-खासगी (देवी अहिल्या चेरिटीज ट्रस्ट), इंदौर
9. अहिल्याबाई'- वृंदावनलाल वर्मा
10. शिवकामिनी महादेवी अहिल्याबाई'- अरुंधति सिंह चंदेल